



दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) का अस्तित्व संकट

www.nextias.com

संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) का अस्तित्व संकट

संदर्भ

- संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) अपनी 80वीं सत्र के लिए एकत्रित हो रही है, ऐसे समय में जब यह संस्था अस्तित्वगत संकट का सामना कर रही है, जिसे संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा वैश्विक शासन में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका को कम करने के तीव्र प्रयासों ने अधिक गंभीर बना दिया है।

संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) के बारे में

- इसकी स्थापना 1945 में संयुक्त राष्ट्र (UN) के छह प्रमुख अंगों में से एक के रूप में की गई थी।
- यह संयुक्त राष्ट्र की एकमात्र संस्था है जहाँ सभी 193 सदस्य देशों को समान प्रतिनिधित्व प्राप्त है, प्रत्येक के पास एक मत होता है।
- यह प्रत्येक वर्ष न्यूयॉर्क (मुख्यालय) में अपने सामान्य वाद-विवाद के लिए बैठक करती है — एक उच्च-स्तरीय कार्यक्रम जिसमें विश्व नेता वैश्विक चुनौतियों पर भाषण देते हैं और अपने राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को प्रस्तुत करते हैं।
- यह वैश्विक मानदंडों को आकार देने और ज्वलंत मुद्दों पर सहमति बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, हालांकि इसकी प्रस्तावनाएँ बाध्यकारी नहीं होतीं।

UNGA की भूमिका

- अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा पर चर्चा करना और सिफारिशें देना;
- मानवाधिकारों और सतत विकास को बढ़ावा देना;
- संयुक्त राष्ट्र का बजट अनुमोदित करना और सुरक्षा परिषद के अस्थायी सदस्यों का चुनाव करना;
- मानवीय सहायता और वैश्विक स्वास्थ्य पहलों का समन्वय करना।

UNGA का 80वां सत्र (UNGA80)

- **विषय:** 'बेहतर साथ: शांति, विकास और मानवाधिकारों के लिए 80 वर्ष एवं आगे'
- इसकी अध्यक्षता जर्मनी की पूर्व विदेश मंत्री अन्नालेना बेयरबॉक द्वारा की जा रही है, जो संयुक्त राष्ट्र के इतिहास में यह पद संभालने वाली केवल पाँचवीं महिला हैं।
- यह ऐसे समय में आयोजित हो रहा है जब विश्व एक साथ कई संकटों — संघर्ष, जलवायु परिवर्तन, असमानता और तकनीकी विघटन — का सामना कर रहा है।

UNGA के समक्ष संकट

- **संरचनात्मक और प्रक्रियात्मक सीमाएँ:**
 - **अप्रभावी प्रकृति:** UNGA के निर्णय बाध्यकारी नहीं होते, जबकि सुरक्षा परिषद (UNSC) के होते हैं।
 - **अत्यधिक राजनीतिकरण:** G-77, NAM और पश्चिमी गठबंधनों जैसे मतदान समूह सहमति की गुंजाइश को कम करते हैं।
 - **कार्यसूची का भार:** वार्षिक रूप से 170 से अधिक एजेंडा आइटम होने के कारण चर्चाएँ प्रायः औपचारिकता बन जाती हैं।
 - **अन्य UN संस्थाओं से दोहराव:** मानवाधिकार परिषद, ECOSOC और सुरक्षा परिषद के साथ ओवरलैप UNGA की प्रभावशीलता को कमजोर करता है।

- **प्रतिनिधित्व और वैधता का संकट:** वैश्विक दक्षिण के देश वित्त, सुरक्षा और जलवायु कार्रवाई जैसे निर्णयों में कम प्रतिनिधित्व प्राप्त करते हैं।
 - यह हाशिए पर रखे जाने की धारणा को बढ़ाता है, विशेष रूप से जब प्रतिबंधों, जलवायु प्रतिबद्धताओं या विकास सहायता पर प्रस्ताव केवल परामर्शात्मक होते हैं, क्रियान्वयन योग्य नहीं।
- **अप्रभावशीलता के उदाहरण:**
 - **यूक्रेन युद्ध (2022–23):** रूस की निंदा करने वाले भारी प्रस्ताव आक्रामकता को रोकने में विफल रहे।
 - **मध्य पूर्व संघर्ष:** दशकों से फिलिस्तीन पर पारित प्रस्ताव लागू नहीं हो सके।
 - **जलवायु आपातकाल:** वार्षिक चर्चाओं के बावजूद, वैश्विक जलवायु प्रतिबद्धताएँ COP वार्ताओं द्वारा संचालित होती हैं, UNGA द्वारा नहीं।

UNGA के क्षरण में अमेरिका की भूमिका

- **वित्तीय कटौती और दबाव:** अमेरिका, जो पारंपरिक रूप से UN बजट का सबसे बड़ा योगदानकर्ता रहा है, ने भुगतान रोक दिए या विलंबित किए, जिससे UN एजेंसियों में नकदी संकट उत्पन्न हुआ। इसमें शामिल हैं:
 - WHO, UNESCO और मानवाधिकार परिषद से वापसी;
 - फिलिस्तीनी शरणार्थियों के लिए UN राहत कार्य एजेंसी की वित्तपोषण में कटौती;
 - पेरिस समझौते और जलवायु संबंधित वित्त के लिए समर्थन रोकना;
 - शांति स्थापना और स्वास्थ्य सहित UN संचालन में योगदान 80% से अधिक घटाना।
- **एकपक्षवाद बनाम बहुपक्षवाद:** ट्रंप प्रशासन की 'अमेरिका फर्स्ट' नीति नीति UN के बहुपक्षीय दृष्टिकोण से टकराती रही है।
 - ट्रंप अपने 'सात युद्धों को समाप्त करने' के रिकॉर्ड को उजागर करने की संभावना करते हैं, जिससे वे स्वयं को शांति समर्थक राष्ट्रपति के रूप में प्रस्तुत करते हैं।
- **वैश्विक मुद्दों पर चयनात्मक भागीदारी:** अमेरिका ने फिलिस्तीन और दो-राज्य समाधान पर उच्च-स्तरीय सम्मेलनों जैसे प्रमुख UNGA पहलों से दूरी बना ली है।
- **बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत के विकल्प** परंपरागत मांगें, जैसे UNSC विस्तार, वर्तमान विभाजित वातावरण में प्रगति की संभावना नहीं रखतीं। इसके बजाय भारत को चाहिए कि वह:
 - कृत्रिम बुद्धिमत्ता शासन और डिजिटल विनियमन जैसे रणनीतिक प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित करे;
 - उत्तर-दक्षिण विभाजन को समाप्त करने वाले गठबंधन बनाए;
 - UN के नियमित बजट (वर्तमान में केवल \$38 मिलियन) और राष्ट्रीय हितों से जुड़े एजेंसियों में वित्तीय योगदान बढ़ाए;
- भारत को अपनी स्थिति को दर्शाने के लिए समर्थन बढ़ाना चाहिए, क्योंकि वह विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।
 - चीन लगभग \$680 मिलियन और अमेरिका \$820 मिलियन का योगदान देता है।

आगे की दिशा

- UNGA का अस्तित्वगत संकट इसके अस्तित्व से अधिक इसकी प्रासंगिकता से जुड़ा है। यह धीरे-धीरे औपचारिकता में परिवर्तित हो सकता है, जब तक कि सुधार इसकी अंतरराष्ट्रीय कार्रवाई को प्रभावित करने की क्षमता को न बढ़ा दें।
- सुधार प्रस्ताव और प्रतिरोध:
 - ♦ UNGA प्रस्तावों और सुरक्षा परिषद के आदेशों के बीच संबंध सुदृढ़ करना;
 - ♦ महासभा के निर्णयों के अनुपालन को ट्रैक करने के लिए तंत्र बनाना;
 - ♦ वैश्विक संकटों को प्राथमिकता देने हेतु एजेंडा आइटम का युक्तिकरण करना;
 - ♦ विकास केंद्रित आदेशों को लागू करने के लिए अधिक बजटीय स्वायत्तता देना।
- वैधता पुनः प्राप्त करने के लिए UNGA को चाहिए कि वह:
 - ♦ डिजिटल कूटनीति और पारदर्शी वैश्विक रिपोर्टिंग को अपनाए;
 - ♦ जलवायु, स्वास्थ्य, और तकनीकी शासन जैसे वैश्विक सार्वजनिक वस्तुओं का संरक्षक बने;
 - ♦ बाध्यकारी कानून नहीं तो वैश्विक जनमत के माध्यम से शक्तिशाली देशों पर नैतिक दबाव बनाए।

[Source: IE](#)

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) के अस्तित्वगत संकट में योगदान देने वाले कारकों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। समकालीन वैश्विक शासन में इसकी प्रासंगिकता को पुनः स्थापित करने के लिए कौन से सुधार आवश्यक हैं?

